आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 7 बीकानेर, मार्च, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से...

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना की अभिनव शुरूआत

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 फरवरी को राज्य के श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ में राष्ट्रीय योजना ''मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना'' की शुरूआत की। वायु और जल प्रदूषण के साथ साथ अब जमीन भी प्रदूषण का शिकार हो रही है। कृषि में अंधाधुंध कीटनाशकों के उपयोग और पोषक तत्वों की निंरतर हो रही कमी के चलते मृदा स्वास्थ्य तेजी से प्रभावित हो रहा है। धरा हमारी पोषक है इसलिए इसे धरती मां के नाम से पुकारा जाता है। यह समस्त जीव जगत की पालन हार है। मृदा के स्वास्थ्य में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी का सीधा असर मनुष्य जाति और पशु पक्षियों पर भी पड़ना लाजिमी है। अतः माननीय प्रधानमंत्री ने इस मौके पर ''स्वस्थ धरा–खेत हरा'' का नारा देकर एक सफल किसान बनने के लिए खेत के एक तिहाई भाग में परंपरागत खेती, एक तिहाई में वृक्ष और फल पौधे लगाने तथा शेष एक तिहाई में पशुपालन और पोल्ट्री फार्म को बढ़ावा देने की बात कही है। पशुधन और पोल्ट्री कृषि में सबसे सुरक्षित और लाभकारी कारक है। राज्य का कृषक और पशुपालक समुदाय इस तथ्य से बखूबी वाकिफ है। विपरीत जलवायु परिस्थितियों और कम पानी के बावजूद भी पशुपालन ने सदैव हमें सम्बल दिया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पशुओं के लिए स्वास्थ्य वर्द्धक चारा और आहार तथा जैविक पशु उत्पादों के लिए अपने स्तर पर अनेकों कार्यक्रम और योजनाएं शुरू की हैं। इसके लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु पोषण विभाग में चारा और पशु आहार जांच प्रयोगशाला, जयपुर में दुग्ध जांच की प्रयोगशाला, पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर वर्मी कम्पोस्ट खाद की उत्पादन इकाइयां, फार्म पर बूंद–बूंद सिंचाई से जैविक चारा उत्पादन, जैविक पशुधन उत्पादन जैसे कार्य किए जा रहे हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के प्रत्येक जिले में खोले जा रहे वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर न सिर्फ पशुपालन के क्षेत्र में प्रशिक्षण बल्कि पशु आहार व पशु उत्पाद की जांच एवं पशु रोग निदान जांच प्रयोगशालाएं आदि की सुविधाएं विकसित कर केन्द्र की उपयोगिता को और अधिक प्रभावी बनाया जायेगा।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

सभी पशुपालक और कृषक भाईयों को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

मुख्य समाचार

कृषि विज्ञान सम्मेलन एक्सपो-2015

बीकानेर। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के सहयोग से 12वें कृषि विज्ञान सम्मेलन–2015, करनाल (हरियाणा) में 3–6 फरवरी को आयोजित

हुआ। इस मेले में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में नवीन तकनीकों, पशुधन स्वास्थ्य, उत्पादन प्रबंधन, एवं चारा संरक्षण की साईलेज तकनीक, ऊंटों में इंटर डेंटल वायर तकनीक आदि की जानकारी पशुपालकों एवं किसानों की दी ।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के देशी गौवंश नस्ल कार्यक्रम से प्रेरित हुआ महाराष्ट्र राज्य

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य की धरोहर देशी गौवंश नस्लों के संरक्षण व दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के कार्यो की गूंज महाराष्ट्र के पुणे जिले तक पहुंच गई है। राजस्थान से प्रेरित हो कर पुणे में थारपारकर गौ क्लब की स्थापना की गई है तथा देशी गौ नस्लों के संरक्षण व संवर्द्धन के लिये वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर से सहयोग मांगा है। पुणे के पशुपालन आयुक्त डॉ. ए.टी. कुंभार के नेतृत्व में महाराष्ट्र के एक दल ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की अध्यक्षता में

विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता एवं निदेशकों के साथ 14 फरवरी को कुलपति सचिवालय में बैठक की। कुलपति प्रो. गहलोत ने महाराष्ट्र राज्य के पदाधिकारियों को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। विश्वविद्यालय चुनिन्दा स्वदेशी गौवंश यथा राठी, थारपारकर, कांकरेज, गिर तथा साहीवाल नस्लों पर कार्य कर रहा है तथा विश्वविद्यालय को इन पांच स्वदेशी नस्लों के संरक्षण का गौरव प्राप्त है।

जैविक पशुपालन समय की मांग - कुलपति प्रो. गहलोत

वेटरनरी विश्वविद्यालय में जैविक पशुधन उत्पाद तकनीकी केन्द्र का लोकार्पण

बीकानेर। उपभोक्ता खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता तथा खाद्य सुरक्षा के प्रति बहुत जागरूक है। रसायन मुक्त, पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित, गुणवत्तायुक्त, स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों के मांग की पूर्ति जैविक पशुपालन के द्वारा ही संभव है। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने 18 फरवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय में जैविक पशुधन उत्पाद तकनीकी केन्द्र के भवन के लोकार्पण समारोह में पशुपालकों को सम्बोधित करते हुए कही। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि जैविक पशुपालन में राजस्थान प्रदेश के लिए सबसे लाभप्रद बात यह है की हमारे पास विभिन्न हार्मोनों,

एलोपैथिक दवाओं के स्थान पर प्रयोग करने के लिए आयुर्वेद का गहन एवं विस्तृत पारम्परिक ज्ञान है जो कि स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। जैविक पशु उत्पाद अन्य पशु उत्पादों की तुलना में अधिक मूल्य पर बिकते हैं इसलिए जैविक पशुपालन आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए लाभकारी है। जैविक पशुपालन वर्तमान की आधुनिक पशु उत्पादन प्रणालियों की सभी समस्याओं का एक समाधान तो नहीं है परंतु यह जैविक पशु उत्पादों के तेजी से विकसित होते उपभोक्ता बाजार की मांग की पूर्ति करने के लिए बहुत जरूरी है।

जैविक पशुपालन पर पशुपालकों का प्रशिक्षण संपन्न

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र, बीकानेर में "वर्तमान परिपेक्ष्य में जैविक पशुपालन का महत्व" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. बसन्त बैस ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कोलायत तहसील के 52 पशुपालक सम्मिलित हुए। प्रशिक्षण के दूसरे दिन डॉ. अनुराग पाण्डेय, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. मंजीत सोनी व डॉ. जे.पी. कच्छावा ने जैविक पशुपालन विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। इस अवसर पर पशु पालकों को विश्वविद्यालय का भ्रमण करवाया गया। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने पशुपालको को हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से जैविक चारा उत्पादन व अन्य महत्वपूर्ण तकनीकों के बारे में जानकारी दी।

राज्य स्तरीय पशु आपदा प्रबंधन की कार्यशाला का आयोजन

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र द्वारा ''पशुओं के लिए आपदा प्रबंधन – नए दृष्टिकोण और आगामी आयाम'' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के.गहलोत ने कहा की राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पशुधन का महत्वपूर्ण योगदान है। राज्य की 80 प्रतिशत परिवारों की आय पशुपालन पर निर्भर है। चूंकि राज्य का अधिकांश हिस्सा सूखा प्रभावित है। अतः इन प्रतिकूल परिस्थितियों में पशु आपदा प्रबंधन महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र का राज्य में पशु आपदा प्रबंधन में अहम योगदान है। कार्यशाला में सूखा, बाढ़, ग्लोबल वार्मिंग, भूकम्प या अन्य कारणों से होने वाली आपदा की स्थिति में पालतु पशुओं व वन्य जीवों की अकाल मृत्यु को रोकने व पशुपालन को प्रभावित होने से रोकने के प्रबंधन उपायों पर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, नई दिल्ली की डॉ. मोनिका गुप्ता व विश्व पशु संरक्षण के डॉ.

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

अदुग्धदायिनी एवं दुग्धदायिनी थारपारकर गौवंश में कुछ महत्वपूर्ण जैव रासायनिक घटकों का अध्ययन

एक शोध कार्य जिसमें दूध देने की अवस्थाओं के प्रभाव का अध्ययन प्लाज्मा प्रजैविक (एएलटी,एएसटी एवं एएलपी) और कुछ महत्वपूर्ण रक्त जैव रासायनिक पारदर्शो का थारपारकर नस्ल की गायों में किया गया। पशुओं का चयन पशुधन शोध केन्द्र, चांदन (जैसलमेर) से किया गया। रक्त के नमूने नवम्बर 2005 के मध्य में सुबह एकत्रित किये गये। पशुओं को उनके दुधारू अवस्था के अनुसार तीन अवस्थाओं में बांटा गया। अदुग्धदायिनी, दूध देने का पहला आधा समय और दूध देने का अंतिम आधा समय।

प्लाज्मा प्रजैविक में शोध के लिए एएलटी, एएसटी एवं एएलपी को सम्मलित किया गया। रक्त जैव रासायनिक पारदर्शों में मेटाबोलाइट्स के अन्तर्गत रक्त–शर्करा, प्लाज्मा कॉलेस्ट्रोल, रक्त यूरिया एवं प्लाज्मा प्रोटीन प्रोफाइल एवं इलेक्ट्रोलाइट्स जिसके अन्तर्गत कैल्शियम, अकार्बनिक फॉस्फोरस, सोडियम एवं पोटेशियम सम्मलित थे। इन सभी पारदर्शों के स्तरों का दुधारू अवस्थाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि प्लाज्मा प्रजैविक एएलटी, एएसटी एवं एएलपी के स्तर तीनों दुधारू अवस्थाओं में धीर–धीरे बढ़ा है, ये बढ़ा हुआ प्रभाव सांख्यिकी दृष्टि से अर्थपूर्ण ($P<0.01$) पाया गया। ग्लूकोज का दुधारू अवस्था पर प्रभाव तीनों अवस्थाओं में अर्थपूर्ण ($P<0.01$) पाया गया। अदुग्धदायिनी अवस्था में ग्लूकोज का स्तर अन्य दो अवस्थाओं से अधिक पाया गया। कॉलस्ट्राल एवं यूरिया का प्रभाव दुधारू अवस्था के साथ धीरे–धीरे बढ़ता है। प्लाज्मा प्रोटीन प्रोफाइल के अन्तर्गत कुल प्रोटीन, ग्लोबुलिन एवं ए/जी अनुपात दुधारू अवस्था के साथ धीरे–धीरे घटा हुआ पाया गया जबकि एल्बुमिन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पाया गया। इलेक्ट्रोलाइट्स के स्तर पर प्रभाव जिसके अन्तर्गत कैल्शियम, सोडियम एवं पोटेशियम का स्तर दुधारू अवस्था के साथ अर्थपूर्ण ($P<0.01$) रूप से बढ़ा पाया गया, जबकि अकार्बनिक फॉस्फोरस के स्तर पर सांख्यिकी दृष्टि से कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

–शोधकर्ता–मोहिनी विश्नोई, मुख्य समादेष्टा– डॉ. अनिल मूलचन्दानी, डॉ. मीनाक्षी सरीन

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-मार्च, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग (ऐन्ट्रोटोक्सिमिया)	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, अलवर, भीलवाड़ा, हनुमानगढ़, कोटा, बारां, झुंझुनूं
हेमरेजिक सेप्टीसिमिया (गलघोटूँ)	गाय, भैंस	दौसा, अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, सीकर, हनुमानगढ़
मुँहपका –खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस	बाड़मेर, चुरू, धौलपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, नागौर , बीकानेर
माता रोग (चेचक)	भेड़, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर
लंगड़ा बुखार (Black Quarter)	गाय	चित्तौड़गढ़, बीकानेर
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
बोच्यूलिज्म	गाय	बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर
पी.पी.आर. (PPR)	भेड़, बकरी	बीकानेर, सीकर, कोटा, उदयपुर
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊँट	धौलपुर, सीकर, भरतपुर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर
एम्फीस्टोमियेसिस	गाय, भैंस बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाडा
फेसियोलियेसिस (Fasciolosis)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, धौलपुर, अलवर, कोटा, डूंगरपुर, उदयपुर, बांसवाडा
एनाप्लाज्मोसिस	भैंस	भरतपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – प्रो. (डॉ.) बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं प्रो. (डॉ.) अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं प्रो. (डॉ.) ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग

पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर का एक ऐसा विभाग है जहाँ पर इस महाविद्यालय में स्नातक में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न पशु उत्पादों से जुड़े विषयों जैसे दूध और दुग्ध उत्पादों की प्रौद्योगिकी, वधशाला पद्धतियों और पशु उत्पादों की प्रौद्योगिकी तथा मांस विज्ञान इत्यादि विषयों का अध्ययन किया जाता है। इस विभाग में विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु स्मार्ट क्लास रूम अत्याधुनिक सुविधा से सुसज्जित है, जिसमें स्मार्ट तरीके से पढ़ाई करवाई जाती है। विद्यार्थी स्पेशल इफेक्ट्स के माध्यम से चीजें समझते व जानते हैं । इसमें सुनने और देखने का मौका भी मिलता है जिससे उनका आकर्षण बढ़ता है और सम्बन्धित विषयों को तेजी से समझने में मदद मिलती है। अत्याधुनिक प्रयोगशाला में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रायोगिक प्रशिक्षण के तहत दूध में विद्यमान वसा, एस.एन.एफ और कुल ठोस का अनुमान जानने की विधियां बताई जाती हैं। दूध में मिलावट के बढते हुए कारोबार को देखते हुए विभाग के विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न मिलावटी पदार्थों के परीक्षण की तकनीक भी विद्यार्थियों को दी जाती है। इसके साथ ही इस विभाग के विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों को उद्यमिता प्रशिक्षण दिया जाता है ।

उद्यमिता प्रशिक्षण के तहत विभिन्न दुग्ध उत्पाद जैसे पनीर, दही ,खोआ (मावा), श्रीखण्ड इत्यादि के बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान ही विद्यार्थी स्वयं इन दुग्ध उत्पादों को बनाकर विपणन करता है जिसके लिए विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग देता है, विपणन के लाभ से प्राप्त राशि विद्यार्थियों के द्वारा आपस में बांट ली जाती है ।

। आप हमें मानव संसाधन दें, हम आपको उन्नत तकनीक देंगे।

पशुओं के स्वास्थ्य की पहचान और रोग प्रबन्धन

पशुपालन व्यवसाय की सफलता के लिए उनके स्वास्थ्य का समुचित ध्यान रखना आवश्यक है। पशुओं को स्वस्थ रखने हेतु शरीर में कई जैव रासायनिक क्रियाएं संचालित होती रहती हैं। जब कोई जैव रासायनिक क्रिया किसी कारणवश सामान्य रूप से कार्य नहीं कर पाती है तो पशु का शरीर उसे भौतिक रूप से प्रदर्शित करता है तथा पशु रोगग्रस्त हो जाता है। पशु इन जैव–रासायनिक क्रियाओं की असमानता को लक्षणों के रूप में प्रकट करता है। रोग की पहचान में लक्षणों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। किसी पशु का सामान्य रूप से चलना–फिरना एवं खड़ा होना, सामान्य तापक्रम, नाड़ी गति एवं श्वसन, चमकीली एवं चौकन्नी आंखे, चुस्त कान, मुलायम लचीली त्वचा, भोजन में रूचि एवं भली प्रकार मल–मूत्र का त्याग आदि उसके पूर्णतया स्वस्थ होने के सूचक हैं। इसके विपरीत सामान्य कार्यों में किसी कारणवश अवरोध उत्पन्न होकर शरीर का अस्वस्थ हो जाना ही रोग कहलाता है।

पशु के रोगग्रस्त होने के लिए मुख्य रूप से तीन कारक उत्तरदायी होते हैं– पशु स्वयं, वातावरण एवं रोगकारक सूक्ष्मजीव। रोग होने में इनमें से कोई एक अथवा दो अथवा तीनों कारक सम्मिलित रूप से उत्तरदायी हो सकते हैं। कुछ रोग किसी नस्ल विशेष में ही पाये जाते हैं जैसे थाइलेरियोसिस सामान्यतः संकर एवं विदेशी नस्ल की गायों में ही देखा जाता है। कुछ रोग जैसे हीट स्ट्रोक हेतु वातावरणीय कारक उत्तरदायी हैं। इसी प्रकार थनैला रोग के लिए पशु स्वयं, वातावरण एवं सूक्ष्मजीव तीनों ही उत्तरदायी हैं। जब पशु, वातावरण एवं रोगकारक सूक्ष्मजीवों का संतुलन बिगड़ जाता है तो शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। पशुओं को रोगमुक्त रखने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए:–

1. अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता रखने वाली नस्लों का चयन करें
2. पशुओं को संतुलित आहार प्रदान करें
3. पशुओं की समुचित देखभाल एवं व्यवस्था करें
4. पशुओं को समुचित आवास प्रदान करें
5. पशुओं में नियमित टीकाकरण एवं कृमि नियंत्रण करें

''उपचार से रोकथाम बेहतर'' यह सूक्ति पशुपालन की सफलता का ब्रह्म वाक्य है। पशु रोगों की रोकथाम हेतु निम्न उपाय अपनाने आवश्यक हैं–

टीकाकरण: किसी संक्रामक रोग के विरुद्ध जैविक कारकों के माध्यम से पशु शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करना ही टीकाकरण कहलाता है। विभिन्न संक्रामक रोगों के विरूद्ध टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह से नियमित रूप से करवाना चाहिए।

पशुओं में होने वाले प्रमुख रोग एवं उनकी रोकथाम

रोग	रोकथाम
खुरपका – मुंहपका	4–6 माह की उम्र से अधिक के सभी पशुओं का वर्ष में 1 या दो बार विशेषकर अक्टूबर–नवम्बर माह में टीकाकरण
गलघोंटू	4–6 माह की उम्र से अधिक के सभी पशुओं का वर्ष में 1 या दो बार विशेषकर मई–जून में टीकाकरण
लंगड़ा बुखार	4–6 माह की उम्र से अधिक के सभी पशुओं का वर्ष में 1 या दो बार विशेषकर मई–जून माह में टीकाकरण
थाइलेरियोसिस नामक प्रोटोजोआ जनित रोग	संकर नस्ल के पशुओं में ही 6 माह की उम्र के पश्चात प्रतिवर्ष विशेषकर जून–जुलाई माह में
ब्रुसेलोसिस नामक संक्रामक गर्भपात	केवल मादा पशुओं को 6 से 8 माह की उम्र पर जीवन काल में मात्र एक बार
ऐन्थ्रेक्स	4–6 माह की उम्र के पश्चात एन्थ्रेक्स बेल्ट में प्रतिवर्ष टीकाकरण
रेबीज	पागल कुत्ते के काटने के तुरन्त पश्चात या 24 घण्टे के अन्दर टीकाकरण
भेड़ एवं बकरियों में फड़किया रोग	3–4 माह की उम्र से अधिक के सभी पशुओं का प्रतिवर्ष मई–जून माह में टीकाकरण
भेड़ एवं बकरी में चेचक	3–4 माह की उम्र के पशुओं में प्रतिवर्ष अक्टुबर–नवम्बर माह में टीकाकरण
पी.पी.आर	4–6 माह की उम्र से अधिक के सभी पशुओं में वर्ष में 1 या दो बार विशेषकर अक्टूबर–नवम्बर में टीकाकरण

रोगग्रस्त पशु को कभी भी रोगनिरोधक टीका नहीं लगाना चाहिए।

शेष पेज 7 पर.....

कंटेजियस इक्थिमा (सोर माउथ) रोग से ग्रसित भेड़-बकरियों का प्रबंधन कैसे करें

कंटेजियस इक्थिमा एक विषाणुजनित रोग है जो मुख्य रूप से भेड़ व बकरियों को प्रभावित करता है। भेड़ व बकरियों के अतिरिक्त यह रोग ऊंट एवं अन्य पशुओं में भी हो सकता है। यह रोग पशुओं को सर्द ऋतु में प्रभावित करता है। सामान्यतया इस रोग में मृत्युदर कम होती है, लेकिन प्रभावित पशु के उत्पादन में बहुत विपरीत असर पड़ता है,जिसकी वजह से पशुपालक को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। कुछ स्थितियों में इस रोग के बाद अन्य जीवाणुजनित रोग से पशु प्रभावित होकर मौत का शिकार भी हो सकता है। पशुपालक कंटेजियस इक्थिमा से प्रभावित पशुओं को लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचान सकते हैं। रोग की सही पहचान कर बीमार पशुओं का प्रबंधन कर सकते हैं एवं अन्य स्वस्थ पशुओं को इस रोग से बचा सकते हैं। इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पशु सुस्त हो जाता है, तेज बुखार आता है, भूख नहीं लगती है, आंख व नाक से पानी टपकता है, तत्पश्चात होंठ और नथूनों के आसपास पपड़ी व खुरंट जैसी संरचना बनती है। कई बार पशुपालक कंटेजियस इक्थिमा और माता रोग को एक जैसा समझ लेते हैं लेकिन ये दोनों रोग अलग अलग हैं और लक्षणों के आधार पर दोनों को पहचाना जा सकता है। माता रोग में पशु के पूरे शरीर पर फुंसियां व घाव होते हैं जबकि कंटेजियस इक्थिमा रोग में मुख्य रूप से होंठ और नाक के आसपास ही पपड़ी / खुरंट / फुंसी या घाव होते हैं।

इस रोग से बचाव के लिए निम्न बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए –

1. बीमार पशु को पशुचिकित्सक की निगरानी में एंटीबायोटिक दवाओं का प्रयोग कर अन्य जीवाणुजनित रोगों से प्रभावित होने से बचाया जा सकता है।
2. पशु के मुंह एवं नाक के आसपास घावों को लाल दवा से साफ कर एंटीबायोटिक का लेप लगा देना चाहिए। इन घावों पर मक्खी इत्यादि को बैठने से रोकना अति–आवश्यक है, अन्यथा इन घावों में कीड़े पड़ सकते हैं जिससे पशु को बहुत परेशानी होती है।
3. बीमार पशु को नरम चारा देना चाहिए।
4. सर्दी से समुचित बचाव कर रोगी पशु को अत्यधिक तनाव से भी बचाना चाहिए।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

बकरियों में विषाणुजनित रोग

गांव और परिवार के आर्थिक उन्नयन से बकरियों का सीधा नाता है इसलिए इसे गरीब की गाय के नाम से जाना जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी बकरी पालन किया और वह खुद बकरी के दूध का सेवन करते थे। वर्तमान में बकरियों से करीब 15 हजार करोड़ की आय होती है। बकरी पालन में रोग संक्रमण और इससे मृत्यु दर का ग्राफ बहुत है। वयस्कों में इसका प्रतिशत 5 से 25 व बच्चों में 10 से 40 प्रतिशत रहता है। यदि मृत्यु दर पर काबू पा लिया जाए तो बकरी पालन बेहतरीन व्यवसाय सिद्ध हो सकता है। रोग संक्रमणों में विषाणुजनित रोग मुख्य रूप से जिम्मेदार होते हैं।

पीपीआर– इस रोग से पशुओं की मृत्यु बहुत तेजी से होती है अतः इस रोग को बकरी के प्लेग के नाम से भी जानते हैं। इस रोग के दौरान पशु को काफी तेज बुखार आता है। नाक – आंख से पानी बहने के साथ दस्त आदि के लक्षण दिखते हैं। मुंह में छाले भी हो जाते हैं। भेड़, बकरियों को इस रोग के प्रभाव से बचाने के लिए पीपीआर का टीका लगाया जाता है। यह टीका बकरी के चार माह के बच्चे को लगाया जाता है। इसका असर तीन साल तक रहता है।

खुरपका, मुंहपका रोग– यह रोग छोटे और बड़े सभी पशुओं में होता है। इसका असर विशेषकर बरसात और गर्मी में मिश्रित स्थिति में दिखता है। मानसून के प्रारंभ में ही रोग पशुओं को अपने प्रभाव में ले लेता है। इस रोग के संक्रमण से पशु के खुर सड़ जाते हैं। मुंह में छाले बनकर पक जाते हैं। पशु न तो ठीक से खड़े होने, न घूमने लायक और न ही चारा खाने लायक होता है। इससे कमजोर होकर वह अन्य रोगों की गिरफ्त में आकर काल कल्वित हो जाता है। इस रोग के लिए अभियान चलाकर पशुपालन विभाग द्वारा टीके लगाए गए हैं। जिन पशुओं को टीका नहीं लगा है वह तत्काल निकट के पशु चिकित्सालय पर टीका लगवाएं।

ब्लू टंग – यह रोग कीड़े–मकौड़ों के माध्यम से फैलता है। इस रोग से प्रभावित पशु सुस्त होकर चारा छोड़ देता है। मुंह व नाक पर लाली बढ़ जाती है। इसका निदान भी टीके के माध्यम से होता है। उल्लेखनीय है कि पशु को रोग के प्रभाव में आने से पूर्व ही टीका लगाने का लाभ होता है। रोग बढ़ने पर टीके का कोई विशेष लाभ नहीं होता।

बकरी चेचक – यह रोग भी बकरियों में महामारी की तरह फैलता है। इसके प्रभाव से पशु के शरीर पर चकत्ते बन जाते हैं और अतंतः पशु मृत्यु का शिकार बन जाता है। इस रोग से बचाव के लिए भी बकरी के तीन–चार माह के बच्चे को टीका लगवा देना चाहिए।

मुंहा रोग – इस बीमारी के प्रभाव से मुंह, थन, योनिमुख, कान आदि की त्वचा कड़ी हो जाती है और उस पर छाले बन जाते हैं। बकरी के बच्चों में इसका प्रभाव होठों पर दिखता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क पर उपचार कराना चाहिए। –

डॉ. अनिल मूलचन्दानी एवं डॉ. मीनाक्षी सरीन, राजुवास, बीकानेर (09782410301)

सफलता की कहानी

डेयरी व्यवसाय से विजय का जीवन हुआ खुशहाल

हनुमानगढ़ जिले में रावतसर तहसील के खुशहाल गांव चक 4 एएम की खुशहाली में लेखराज जाट के पुत्र विजय ने चार चांद लगाए हैं, जिनकी सफलता की कहानी आस–पास के क्षेत्र के लिए प्रेरणा का स्त्रोत तथा पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय को नए मुकाम तक पहुंचाने में सक्षम बनी है। पूर्व में पारम्परिक कृषि द्वारा परिवार के सदस्य अथक मेहनत के बावजूद मुश्किल से भरण–पोषण ही कर पाते थे और पशुपालन सिर्फ अपने परिवार के लिए दूध,घी की आपूर्ति तक सीमित था। विजय ने इसमें बदलाव करने की ठान ली और उसने शुरूआत में 10–12 गायों से डेयरी व्यवसाय से शुरूआत की जिससे उसे तेजी से मुनाफा मिलने लगा और फिर उसने मुड़कर नहीं देखा और आगे बढ़ता गया। आज उसके पास 40 छोटे–बड़े पशु हैं जिनमें उत्तम किस्मों की गायें मुख्यतः दूध उत्पादन के लिए रखी हैं। दूध को पहले तो सरस डेयरी में विपणन किया परन्तु अब उसने अपने स्तर पर दुग्ध अवशीतन केन्द्र का अधिग्रहण कर लिया है जहां आस–पास के पशुपालकों द्वारा 6000 लीटर दूध का विपणन प्रतिदिन हो जाता है। डेयरी व्यवसाय से इसकी मासिक आमदनी करीब 50,000/–रू. तक हो जाती है। उसने अपनी 40 बीघा जमीन जो पानी की अपर्याप्तता के कारण पूर्व में उचित मुनाफा नहीं दे पाती थी को भी कृषि के आधुनिक तौर–तरीके एवं जल संसाधन एवं सरंक्षण के विभिन्न माध्यमों से उपजाऊ बनाया। जौ, ज्वार फसलों के साथ साथ पशुओं के लिए चारा, रिजका आदि मुख्यतः उपज लेता है। करीब 7 हैक्टेयर भूमि में विजय ने जैविक खेती को भी अपनाया है जिसमें वह सिर्फ देशी खाद् का उपयोग करता है जिससे प्राप्त फसल की गुणवत्ता भी उत्तम है। विजय कृषि विज्ञान केन्द, नोहर से जुड़कर समय समय पर उचित जानकारी प्राप्त करता साथ ही वह विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक प्रचलित कृषि तकनीक और समन्वित कृषि पद्धति को अपनाकर न सिर्फ अपने आप को समृद्ध बनाया बल्कि अन्य किसान एवं पशुपालक भाईयों को आगे पढ़ने का रास्ता दिखाया है – **विजय (मो. 09982581796)**

.....पेज 5 का शेष

परजीवियों का उपचार: टीकाकरण करने से लगभग दो सप्ताह पूर्व पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलानी चाहिए। सामान्यतः पशुओं को वर्ष में तीन बार कृमिनाशक दवाई पिलाना चाहिए। पशु के शरीर में कृमियों के संक्रमण से पशु कमजोर हो जाता है, पशु के शरीर में रक्ताल्पता हो जाती है। पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी आ जाती है तथा पशु की वृद्धि, उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

पृथ्थकरण (आइसोलेसन): संक्रामक एवं छूत के रोग का सन्देह होते ही बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से पृथक कर देना चाहिए एवं उसकी देखभाल भी अलग करनी चाहिए। रोगी पशु की देखभाल करने वाला व्यक्ति भी अलग ही होना चाहिए। परिचारकों की कमी की स्थिति में परिचारक द्वारा पहले स्वस्थ एवं बाद में रोगी पशु की देखभाल करनी चाहिए। रोगी पशु की देखभाल करने के बाद परिचारक को अपने हाथ–पैर दवायुक्त पानी के घोल जैसे डेटोल, सेवलोन आदि से धोना चाहिए। रोगी पशु के खान–पान की व्यवस्था स्वस्थ पशुओं से अलग करनी चाहिए।

क्वारंटीन: नये खरीदे हुए पशुओं को पुराने पशु समूह में मिलाने से पहले 15 से 21 दिन तक अलग रखकर उनके संक्रामक रोग से पीड़ित होने या न होने का निरीक्षण करना चाहिए। इस अवधि के दौरान यदि किसी बीमारी के लक्षण नहीं पाये जाते हैं तो पशु को स्थापित पशु समूह में मिलाना चाहिए।

पशुओं में स्वास्थ्य प्रबन्धन के विशेष उपायों के अतिरिक्त सामान्य उपाय भी किये जाने चाहिए जिनमें पशु आवास अथवा बाड़े में साफ–सफाई की व्यवस्था, पशुओं के मल–मूत्र आदि की निकासी की व्यवस्था, पशु आवास में सूर्य के प्रकाश, रोशनी, एवं हवा के आवागमन की व्यवस्था, पशुओं हेतु सन्तुलित आहार एवं स्वच्छ पानी की व्यवस्था आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार पशुपालक पशुओं में विभिन्न संक्रामक रोगों की सम्भावना को कम कर सकते हैं।

–गिरीश कुमार दाखेड़ा एवं डॉ. एस. के. शर्मा पशुधन अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर, उदयपुर

निदेशक की कलम से...

बेहत्तर पशुधन प्रबंधन से ही प्रदेश में खुशहाली लाई जा सकती है

राजस्थान की अर्थ व्यवस्था में पशुधन एवं पशुपालक का महत्वपूर्ण स्थान है। पशुपालन व्यवसाय से प्रदेश की बहुसंख्यक ग्रामीण आबादी अपना जीवनयापन करती है। उत्तम पशुधन संपदा प्रदेश को विरासत में मिली है, तथा इसका निरन्तर संवर्द्धन व विकास हमारी जिम्मेदारी है ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को उन्नत पशुओं की उपलब्धता के साथ पशुपालन सुदृढ़ स्थिति में धरोहर के रूप में सौंप सकें। विश्वविद्यालय इस कार्य हेतु समर्पित भाव से पशुपालकों के साथ है। एक उत्तम एवं लाभकारी पशुपालन हेतु वर्तमान परिदृश्य में यह नितांत आवश्यक है कि हम अच्छी गुणवत्ता वाले उत्तम कोटि के देशी गौवंश, भैंस, भेड़ व बकरियों को बढ़ावा दें तथा वैज्ञानिक विधि से उनके प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित करें। विश्वविद्यालय समय समय पर इस हेतु जानकारी प्रसार के विभिन्न तरीकों से पशुपालकों तक पहुंचाता है। विश्वविद्यालय पशुपालकों को इस हेतु अपनी विभिन्न इकाइयों के माध्यम से प्रशिक्षण देने हेतु भी तत्परता से कार्यरत है। इस कार्य को और अधिक गति देने एवं प्रदेश के प्रत्येक पशुपालक तक पहुंचने हेतु विश्वविद्यालय ने प्रदेश के 10 जिलों में ''पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र'' की स्थापना की है साथ ही राज्य के अन्य जिलों में भी इन केन्द्रों की स्थापना हेतु अग्रसर है, ताकि विश्वविद्यालय प्रदेश के पशुपालकों को उन्नत तरीके से पशुपालन हेतु प्रशिक्षण एवं तकनीक पहुंचा सके। पशुपालक भाईयों का सहयोग वैज्ञानिक विधि से पशु प्रबंधन व नई तकनीक अपनाने में अपेक्षित है। मैं आशा करता हूँ कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय व प्रदेश के पशुपालक भाई परस्पर सहयोग से पशुपालन को प्रदेश में नया आयाम दे सकेंगें जिससे पशुपालक भाई अधिक उपार्जन कर सकेंगे और प्रदेश की अर्थ व्यवस्था भी पशुपालन के क्षेत्र में सुदृढ़ होगी।

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो.09414264997)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत जनवरी 2015 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. उर्मिला पानु 09460226250 पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग	जैव विविधता संरक्षण की विधियां	05.03.2015
2	प्रो. एस.बी.एस. यादव 09828063132 पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग	दुधारू पशुओं के दुग्ध उत्पादन में कमी होने के कारण एवं उसका निवारण	12.03.2015
3	प्रो. हेमन्त दाधीच 09351687945 विभागाध्यक्ष पशु रोग निदान विभाग	मौसम परिवर्तन से पालतू पशुओं में होने वाले रोग एव उसकी रोकथाम	19.03.2015
4	डॉ. दीपिका धूड़िया 09413684447 पशु औषध विभाग	पशुओं के कुपोषण से होने वाले रोग व बचाव	26.03.2015

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : मार्च, 2015

बुक पोस्ट भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. त्रिभुवन शर्मा द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. त्रिभुवन शर्मा